ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–९६
दिनांक– शुक्रवार, १७ दिसम्बर, २०२१

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 24.9 एवं 8.5 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 96 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 49 प्रतिशत, हवा की औसत गति 9.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.8 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 7.1 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 12.8 एवं दोपहर में 23.1 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(18–22 दिसम्बर, 2021)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 18–22 दिसम्बर, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम क शुष्क रहने का अनुमान है। सुबह में हल्का कुहासा देखे जा सकते है।
- अधिकतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 7 से 9 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। 20 दिसंबर से तापमान में और गिरावट आ सकती है।
- औसतन 10 से 12 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है। पूर्वानुमानित अवधि में सर्द वाली पछिया हवा चलने से ठंढ़ व कनकनी बरकरार रहने का अनुमान है। रात्री एवं सुबह में हल्के से मध्यम कुहासे छा सकते है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 85 प्रतिशत तथा दोपहर में 45 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- गेहुँ की २१–२५ दिनों की फसल में प्रति हेक्टेयर ३० किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें। पहली सिंचाई के बाद गेहूँ की फसल में कई प्रकार के खर–पतवार उग आते है। यह गेहूँ की बुआई के ३० से ३५ दिनों के बाद की अवस्था है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है। जिससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रन हेतु सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्राम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्राम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पर छिड़काव करें।
- गेहुँ की जो फसल २१–२५ दिनों की हो गई हो, में सिंचाई कर प्रति हेक्टेयर ३० किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें।
- गेहूँ की पिछात किस्मों की बुआई २५ दिसम्बर से पहले किसान समपन्न कर लें। इसके बाद बुआई करने पर उपज में कमी आ सकती है।
- गेहूँ की पिछात किस्मों की बुआई करें। इसके लिए एच०यू०डब्लू० २३४, डब्लू०आर० ५४४, राजेंद्र गेहूं–१ एच० आई० १५६३, डी०बी०डब्लू० १४, एच०डी० २९६७ तथा एच०डब्लू० २०४५ किस्में इस क्षेत्र के लिए अनुशसित हैं। प्रति किलोग्राम बीज को २.५ ग्राम बेबीस्टीन की दर से पहले उपचारित करें। पुनः बीज को क्लोरपायरिफॉस २० ई०सी० दवा का ८ मि०ली० प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। बुआई के पूर्व खेत की जुताई में ४० किलोग्राम नेत्रजन, ४० किलोग्राम फॉसफोरस एवं २० किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर डालें। जिन क्षेत्रों में फसलों में जिंक की कमी के लक्षण दिखाई देती हो वैसे क्षेत्रों के किसान खेत की अन्तिम जुताई में जिंक सल्फेट २५ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। छिटकबाँ विधि से बुआई के लिए प्रति हेक्टेयर १५० किलोग्राम तथा सीड ड्रील से पंक्ति में बुआई के लिए १२५ किलोग्राम बीज का व्यवहार करें। बुआई पूर्व खेतों की हल्की सिंचाई अवश्य करें ताकि बीजों का समुचित जमाव सुनिश्चित हो सके।
- आलू की फसल में प्रति हेक्टेयर ७५ किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें। आलू में नियमित रुप से झुलसा रोग की निगरानी करें। रोग का प्रकोप फसल में दिखने पर इसके बचाव हेतु २.५ ग्राम डाई–इथेन एम० ४५ फफूँदनाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें।
- सब्जियों में निकाई–गुड़ाई करें। सब्जियों की फसल जैसे मटर, टमाटर, बैगन, मिर्च में फल छेदक कीट का प्रकोप दिखने पर स्पिनोसेड ४८ ई०सी०/ १ मि०ली० प्रति ४ ली० पानी या क्वीनलफॉस २५ ई०सी० दवा का १.५ मि०ली० प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें।
- अगात बोयी गई रबी मक्का की ५०–५५ दिनों की फसल में ५० किलोग्राम नत्रजन का उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें। फसल में नियमित रुप से कीट एवं रोग–व्याधी की निगरानी करें।
- प्याज के ५०–५५ दिनों के तैयार पौध की रोपाई करे। पाँक्ति से पाँक्ति की दुरी १५ से०मी०, पौध से पौध की दुरी १० से०मी० पर रोपाई करे। खेत की तैयारी में १५ से २० टन गोबर की खाद, ६० किलोग्राम नेत्रजन, ८० किलोग्राम फॉसफोरस, ८० किलोग्राम पोटास तथा ४० किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर का व्यवहार करें।
- ठंढ़ के मौसम में दुधारु पशुओं के देख–भाल एवं पोषण का प्रबंधन सावधानी और उचित तरीके से करना चाहिए। खाने में तेलहन अनाज की मात्रा बढ़ा दे। पौष्टिक हरा चारा, जैसे जई एवं बरसीम प्रयाप्त मात्रा में दे। पाचन तंत्र को ठीक रखने के लिए प्रोबायोटिक दवाए प्रयोग करें। पशुओं को साफ एवं ताजा पानी ही दें। दुध उत्पादन को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए फैटोमैक्स, एम पॉवर इत्यादि दवाऐ दें। साथ ही खनिज एवं विटामिन मिश्रण ५० ग्राम प्रति पशु प्रतिदिन दें।

आज का अधिकतम तापमानः 24.9 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.6 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 7.8 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.3 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी